शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिन्दी कविता में महिला सशक्तीकरण

डॉ. बृजेश धर दुबे
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
सरस्वती विज्ञान महाविद्यालय,
रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

समाज के सामने स्त्रियों से जुड़े हुए प्रश्न प्राचीनकाल से आज तक बने हुए हैं युग के अनुरूप इन प्रश्नों में परिवर्तन होता रहा है। उनके उत्तर भी युगानुरूप तलाशे जाते रहे हैं परम्पराओं में जकड़ी स्त्रियों के बन्धनों को ढीले करने के बहुतेरे प्रयास किये गए इनके सकारात्मक और नकारात्मक परिणाम हासिल हुए भूमंडलीकरण के बाद व्यक्ति और समाज की सोच में बदलाव हुआ है विशेषकर स्त्रियों में नवीन चेतना का संचार हुआ भोगवादी संस्कृति ने स्त्री को अपने शरीर पर अधिकार करना सिखाया वहीं त्यागप्रधान दृष्टि ने पीड़ित महिलाओं के पक्ष में आवाज बुलंद की। दोनों ही स्थितियों को साहित्यकारों ने देखा और इस अपने साहित्य का विषय बनाया। प्रस्तुत शोध पत्र में हिंदी कविता में महिला सशक्तिकरण पर विचार किया गया है।

भूमिका

नारी समाज में करुणा और प्रेम की मूर्ति होती है। स्त्री के आत्मबल के आगे पूरी दुनिया नतमस्तक है। सृजन की पीड़ा ने उसे सहिष्णुता के उच्च सोपान पर स्थापित किया है। नारी की स्थिति किसी भी समाज के विकास का पैमाना है। स्त्री स्वाधीनता और सशक्तीकरण के लिए हर युग में प्रयास किये गए। उस पर होने वाले अत्याचार के खिलाफ सभ्य समाज ने अपनी आवाज बुलंद की है। साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से नारी उत्पीडन को उजागर किया है।

साहित्य जगत में उसे स्त्री-विमर्श के नाम से जाना गया। वर्तमान में नारी को अनेक यातनाएँ खुलेआम या घर के बन्द दरवाजे के पीछे सहन करनी पड़ रही है। यथार्थ के धरातल पर जब विचार करते हैं तब स्त्री स्वतंत्रता के भ्रम नजर आता है। स्त्री के पक्ष में अनेक क़ानून बना दिए जाने के बाद भी उसके शोषण को रोका नहीं जा सका है। कन्या भ्रूण हत्या, अशिक्षा, यौन शोषण, बलात्कार, दहेज़ प्रथा आदि समस्याएं समाज में आज भी विद्यमान हैं। स्त्री को उसके अधिकार से वंचित रखा है।

समाज में महिला सशक्तीकरण तब होगा जब शिक्षा का प्रसार होगा हर महिला अपना हक जानेगी और उसके प्रति जागरूक होगी। निर्मला पुतुल लिखती हैं :

''एक स्त्री यथार्थ में
जितना अधिक घिरती जाती है, इससे
उतना ही अमूर्त होता चला जाता है,
सपने में वह सब कुछ
अपनी कल्पना में हर रोज
एक ही समय में स्वयं को
हर बेचैन स्त्री तलाशती है
घर प्रेम और जाति से अलग
अपनी एक ऐसी जमीन
जो सिर्फ उसकी अपनी हो।''[1]

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

इक्कीसवीं सदी और स्त्री

बदलते हुए परिवेश में आज की नारी की बदलती हुई छवि के ऐसे रूपों से हमारा सामना हो रहा है, जिसमें कहीं तो वह गर्व का कारण है तो कहीं आज भी वह शोषण के मकड़जाल में फंसी हुई है। इक्कीसवीं सदी के एक दशक पूर्ण होने के बाद भी स्त्री की स्थिति में ऐसे परिवर्तन नहीं हुए हैं, जिनके आधार पर यह कह सकें कि स्त्री पूर्णरूपेण स्वतंत्र एवं सुरक्षित है। वास्तविकता यह है कि स्त्री अपने को उन मोर्चों पर स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील ही नहीं बल्कि सिद्ध भी कर रही है, जहाँ केवल पुरुषों का वर्चस्व था। इस प्रक्रिया में वह उनसे संघर्ष की बजाय हम कदम बनकर चलना चाहती है। वह अपनी बदलती हुई छवि में सम्मान पाना चाहती है, क्योंकि अब उसे 'आँचल में दूध, आँखों में पानी' को दयनीयता के नाम पर दिया जाने वाला सम्मान नहीं चाहिए, बल्कि वह उस सम्मान को पाना चाहती है जो उसकी कर्मठता, श्रमशीलता तथा नये रूप में उसकी इस छवि पर हो जहाँ वह पिटती नहीं है, बल्कि कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी है।

नारी को अपना हक जानने के लिए सामने खड़ा होना होगा वे अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक हो और वह जागरूक तभी होगी जब वह शिक्षित होगी। अपने जीवन को, अपने आपको समाज में कैसे स्थान दिला पायेगी इन सभी बातों के लिए महिला सशक्तीकरण होना जरूरी है, क्योंकि महिला हर जगह पुरुष का शिकार होती है। नारी अपने अस्तित्व को बचाने के लिए पुरुष के साथ चलने लगी है और कदम से कदम मिलाकर चलना चाहती है, ताकि जीवन को सुखमय बनाया जाये।

आज की कविता में महिला साहित्यकारों ने भी महिला सशक्तीकरण को उभारा है। वे खुलकर समाज के सामने आई और अपने हक, अस्तित्व को जाना, पहचाना। संवेदनशील पुरुष साहित्यकारों ने भी स्त्री मुक्ति पर समान रूप से कलम चलाई है। विकृत मानसिकता ने स्त्री पर होने वाले अत्याचारों का वीभत्स रूप प्रस्तुत किया है। बलात्कार के आंकड़ों में प्रतिदिन इजाफा हो रहा है। बहला-फुसला कर यौन शोषण आम बात हो गयी है। गरीबी और असुरक्षा भी इसके लिए जिम्मेदार हैं। अनामिका तल्ख़ लहजे में लिखती हैं :

''अंकल तुम भारी बहुत हो,
अच्छा एक चाकलेट खिला दो।
अंकल तुम्हारे भी बेटी है?
अच्छा बोलो उसका क्या नाम है?
वह भी मेरे जैसी मजेदार है क्या, बोलो तो।'' 2

अगर बात करें ग्रामीण अंचल की या आदिवासी महिला की तो वे अभी भी पत्थर के नीचे दबी हुई दिख रही हैं। शिक्षा का प्रसार न हो पाने से वे शोषण की चक्की में आज भी पिस रही हैं। इस बारे में विमल कुमार लिखते हैं, "मित्रों! मैं कहना चाहता हूँ कि यदि अकेले घर से बेटा घूमने निकल जाए और शाम को घर लौटे तो कोई बात नहीं पर यदि लड़की समय पर न आई तो वह अच्छा नहीं है, ये कैसी व्यक्ति की प्रवृत्ति है, इस पर विचार करना चाहिए और उसके प्रति लड़ने के लिए भी महिला सशक्तीकरण के लिए आज शासन द्वारा अनेक कानून लागू किये गये है, और उसके प्रति महिला पुरुष दोनों जिम्मेदार है। महिला को चाहिए कि वे अपने कर्तव्यों के प्रति सजग एवं सचेत रहे और अपने हक को जाने समझे और पहचाने ताकि उस पर कोई अत्याचार, यौन शोषण, बलात्कार आदि-आदि दुष्कर्म न कर सके, यदि कोई महिला इस दुष्कर्म में फँस गई है तो उसे इससे निपटने के लिए

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अनेक रास्ते है और वह सही रास्ते का निर्णय करते हुए उसके प्रति कार्य कर सकती है।'

आज बाजारवाद ने व्यक्ति को स्वतंत्र कर दिया है, इस बाजार में माँ, बहन, बेटी और प्रेयसी सभी मिल जाती हैं, क्योंकि आज बाजार व्यक्ति की सोच, संवेदना सभी को बदल दिया है। आज भूमण्डलीकरण का दौर चल रहा है। इस भूमण्डलीकरण ने औरत की आजादी के सवाल को अपने ढंग से उछाला है और कहा कि महिला को बाजार के माध्यम से आजादी मिली पर आज हम देखते हैं कि महिला श्रमिक की संख्या में इजाफा हुआ। स्त्री की देह पर स्त्री के अधिकार की मुनाफे के रूप में उसे बाजार में परोसा गया और यह बड़े आक्रामक ढंग से मीडिया के सामने प्रचारित किया गया कि स्त्री आजाद हो रही है। यह एक प्रकार का छल-कपट है। जो स्त्रियों की आजादी देने के बदले देह के नुमाईश को व्यक्त करता है। अतः उसकी मुसीबतें कम नहीं हुई बल्कि ज्यादा बढ़ गई -

''बाजार और विज्ञापन उसे अब मुक्ति
रास्ता दिखा रहे थे।
कम्पनियाँ कह रही थी कि अब वह अधिक
स्वतंत्र हुई है,
उसके अन्दर आत्मविश्वास जागा है,
क्योंकि उसकी देह चिकनी हुई है।'4

महिलाओं के अधिकारों को लेकर चलने वाले आन्दोलन निश्चित परिणति तक नहीं पहुंचे हैं। उसकी मुक्ति के लिए एक दरवाजा खुलता है तो दूसरा बंद हो जाता है। नीलेश रघुवंशी लिखते हैं :

''मिल जानी चाहिए मुक्ति स्त्रियों को
आखिर कब तक विमर्श में रहेगी मुक्ति
इतिहास तो पक्के तौर पर अलग
खिड़कियाँ हो अलग,
झाँके कभी स्त्री तो दिखे सिर्फ स्त्री ही
ओ कामगर स्त्री
देखती हो कभी आसमान कभी जमीन
निपटाओं बखूबी अपने सारे काम काज
होने दो मुक्ति अभी समृद्धि संसार की औरतों को।''5

आज की कविता में बाजारवाद पूर्णरूपेण उभरकर कवि के सामने आया है, बाजार ने आज जितना स्वतंत्र किया है, उतना ही कहे तो परतंत्र भी। अक्सर स्त्री को शरीर के भीतर ही देखा गया है वह शरीर से बाहर अपना होना देखती है, पहचानती है। यह पहचान शरीर दृष्टि का विरोध भी है और वास्तविक स्त्रीत्व का आत्मविश्वास भी। बाजार का वादा है कि स्त्री को शरीर में देखकर उसने उसके जीवन में सुखद बदलाव पैदा किए हैं। इसकी कीमत उसे मिल सकती है। महँगे से महँगा बेच सकती है। अपने शरीर सौन्दर्य से पूरी दुनिया को सम्मान के साथ अपनी मुट्ठी में कर सकती हैं। एक सीमा तक यह सच है कि माडलिंग, फैशन डिजाइनिंग आदि के रूप में स्त्री के सामने नए कर्मक्षेत्र खुले है। यह कर्मक्षेत्र है जो लोक लाज, मर्यादा आदि पुराने संस्कारगत मूल्यों को तोड़ते हैं। स्त्री की गुलामी की आदत में सेंध लगाते है। उसे पहले से ज्यादा खुला स्पेस देते है। उसकी आँखों में सेलेब्रिटी बनने की संभावना रखते हैं। शरीर के प्रति उसके नजरियों को बदलते हैं। इसी का नतीजा है कि उसका शरीर अब केवल छिपाने के लिए नहीं रहा है, वह शर्म का नहीं गर्व का विषय है। फहमीदा रियाज ने लिखा है :

''पथरीले को हसार (पहाड़) के गाते चश्मों (झरनों) में
गूँज रही है एक औरत की नर्म हँसी
दौलत, ताकत और शोहरत, सब कुछ भी नहीं

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उसके बदन में छुपी है, उसकी आजादी।''5

मित्रों! मैं एक नजर डालना चाहता हूँ वेश्यावृत्ति पर। आज देखा जा रहा है कि महिलाएँ जितनी स्वतंत्र है उतनी ही परतंत्र। पर मैं जानना चाहता हूँ कि वे यहाँ तक कैसे पहुँची उन्हें गरीबी, मजबूरी लाई है या फिर अमीरों द्वारा लाया गया है। जितना ही महिलाओं के लिए नियम लागू किये जाते है, उतने ही नियम उन्हें परतंत्र रखने के लिए होते है, आज इलाहाबाद, लखनऊ, कलकत्ता या कहे कि हर शहर में इसका लुत्फ़ उठा रहे हैं लोग। उन्हें प्यार से कैसे ठगते हैं और उन्हें अपना शिकार कैसे बनाते हैं, और जब एक बार शिकार शिकारी के हाथ में लग गया तो फिर वे कैसे बाहर आ सकता है। जिस प्रकार पिंजरें में बंद पक्षी दुनिया देखने की कल्पना कर सकता है, पर वह अब देख नहीं सकता है, उसी प्रकार महिलाएँ भी इस दलदल से नहीं निकल पाती है, यह प्यार का कैसा रूप है ? मंगलेश डबराल लिखते हैं :

''प्रेम करती स्त्री
ठगी जाती है रोज,
दुनिया को समझती है, वह
गोद में बैठा हुआ बच्चा
निकल जाती है, अकेली सड़क पर,
देखती है कितना बड़ा फैला शहर,
सोचती है मैं रह लूँगी यहीं कहीं।''6

हम कैसे कह सकते है कि महिला पूर्णरूप से स्वतंत्र है, अगर बात करें घर की तो घर में ही महिला स्वतंत्र नहीं है, अपने आपसे कोई फैसला नहीं ले सकती है। अपने जीवन को दूसरे पर निर्भर पाती है।

निष्कर्ष

इन तमाम संघर्षों के बावजूद कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में महिला सशक्तीकरण ने महिला को स्वतंत्रता की ओर अग्रसर किया है। वे जीवन की दबी हुई इच्छाओं को प्रकट कर सकती हैं। अपने तौर तरीके से जीवन-यापन कर सकती हैं। महिला सशक्तीकरण उसके जीवन में एक नया आयाम लाया है, जिससे वह आकाश में पक्षियों की तरह उड़ सकती हैं, मछलियों की तरह तैर सकती हैं, कल्पना की उड़ान को हकीकत में बदल सकती है। सिर्फ उसमें उत्साह, जोश और सादगी होनी चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 निर्मला पुतुल नगाड़े की तरह बजते शब्द, पृष्ठ7, भातीय ज्ञान पीठ प्रकाशन, नई दिल्ली 2005

2 अनामिका- कविता में औरत, पृष्ठ125, इतिहास बोध प्रकाशन, इलाहाबाद-2004

3 विमल कुमार- रासलीलाओं का फरेब, उद्भावना अंक- 57, पृष्ठ112

4 नीलेश रघुवंशी- स्त्री विमर्श, पानी का स्वाद, पृष्ठ 82

5 फहमीदा रियाज- कतरा-कतरा, अनुवादक, प्रदीप साहिल, पृष्ठ30, वाणी प्राकशन, नई दिल्ली

6 मंगलेश डबराल, घर का रास्ता, पृष्ठ15, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली